



रत्न रिपोर्ट

आपकी कुंडली का सबसे उपयुक्त रत्न — कौन-सा, क्यों, और जीवन में क्या बदलेगा

श्री अभय शर्मा (कल्पनिक) जी हेतु व्यक्तिगत रिपोर्ट

नाम	अभय शर्मा (कल्पनिक)
जन्म तिथि व समय	12 जुलाई 1992 • 09:45
जन्म स्थान	जयपुर
लग्न • राशि • नक्षत्र	सिंह • वृश्चिक • ज्येष्ठा
वर्तमान दशा	सूर्य महादशा (2023–2029)
रिपोर्ट तिथि	24 सितम्बर 2026 • प्रातः 8:02

॥ पारस वाणी ॥

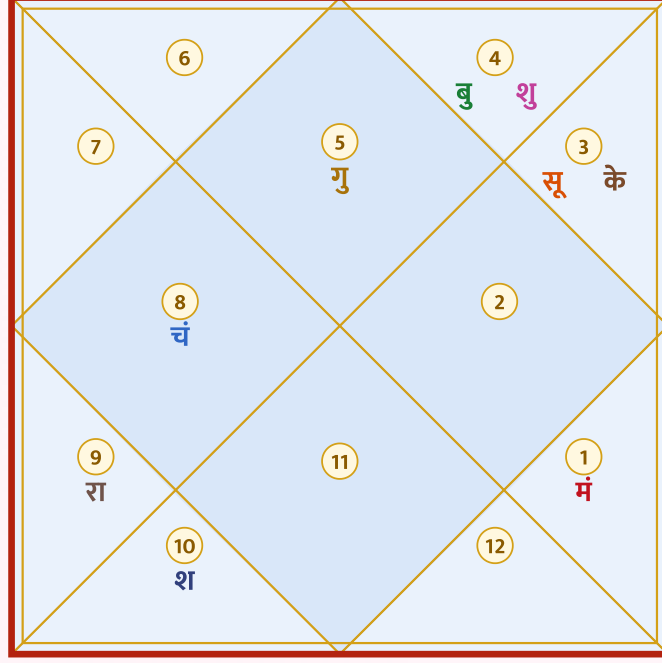
parasvani • वैदिक ज्ञान, आधुनिक तकनीक

यह रिपोर्ट खगोलीय Swiss Ephemeris (लाहिरी अयनांश) गणना पर आधारित है



जन्म कुंडली — ग्रह स्थिति एवं प्रभाव

कुंडली परिचय



जन्म-कुंडली (उत्तर भारतीय पद्धति) • लाहिरी अयनांश

ग्रह	राशि	भाव	क्षेत्र-प्रभाव
सूर्य	मिथुन	11	आत्मबल व प्रतिष्ठा — लाभ व आय
चंद्र	वृश्चिक	4	मन व भावनाएँ — सुख व माता
मंगल	मेष	9	ऊर्जा व साहस — भाग्य व धर्म
बुध	कर्क	12	बुद्धि व व्यापार — व्यय व अध्यात्म
गुरु	सिंह	1	ज्ञान व भाग्य — व्यक्तित्व व स्वास्थ्य
शुक्र	कर्क	12	सुख व कला — व्यय व अध्यात्म
शनि (वक्री)	मकर	6	कर्म व अनुशासन — सेवा व प्रतिस्पर्धा
राहु (वक्री)	धनु	5	महत्वाकांक्षा व नवाचार — बुद्धि व संतान
केतु (वक्री)	मिथुन	11	अध्यात्म व मोक्ष — लाभ व आय

विंशोत्तरी दशा — अंतर्दशा तालिकाएँ

अ भी च ल र ही व अ ग ली म हा द शा • वर्तमान ◀ चिह्न से

सूर्य महादशा ◀

19/04/2023 – 19/04/2029

अंतर्दशा	से	तक
सूर्य	19/04/2023	07/08/2023
चंद्र	07/08/2023	06/02/2024
मंगल	06/02/2024	12/06/2024
राहु	12/06/2024	07/05/2025
गुरु	07/05/2025	23/02/2026
शनि ◀	23/02/2026	05/02/2027
बुध	05/02/2027	13/12/2027
केतु	13/12/2027	19/04/2028
शुक्र	19/04/2028	19/04/2029

चंद्र महादशा

19/04/2029 – 19/04/2039

अंतर्दशा	से	तक
चंद्र	19/04/2029	17/02/2030
मंगल	17/02/2030	18/09/2030
राहु	18/09/2030	19/03/2032
गुरु	19/03/2032	19/07/2033
शनि	19/07/2033	17/02/2035
बुध	17/02/2035	19/07/2036
केतु	19/07/2036	17/02/2037
शुक्र	17/02/2037	19/10/2038
सूर्य	19/10/2038	19/04/2039

योगिनी दशा — अंतर-योगिनी तालिकाएँ

अ भी च ल र ही व अ ग ली यो गि नी • वर्तमान ◀ चिह्न से

भद्रिका योगिनी ◀

स्वामी बुध • 5 वर्ष • 20/08/2024 – 20/08/2029

अंतर-योगिनी	से	तक
भद्रिका	20/08/2024	01/05/2025
उल्का	01/05/2025	01/03/2026
सिद्धा ◀	01/03/2026	19/02/2027
संकटा	19/02/2027	31/03/2028
मंगला	31/03/2028	21/05/2028
पिंगला	21/05/2028	30/08/2028
धान्या	30/08/2028	30/01/2029
भ्रामरी	30/01/2029	20/08/2029

उल्का योगिनी

स्वामी शनि • 6 वर्ष • 20/08/2029 – 21/08/2035

अंतर-योगिनी	से	तक
उल्का	20/08/2029	21/08/2030
सिद्धा	21/08/2030	21/10/2031
संकटा	21/10/2031	19/02/2033
मंगला	19/02/2033	21/04/2033
पिंगला	21/04/2033	20/08/2033
धान्या	20/08/2033	19/02/2034
भ्रामरी	19/02/2034	21/10/2034
भद्रिका	21/10/2034	21/08/2035

रत्न-विवरण ~ कौन-सा रत्न, कैसे धारण करें

आपकी कुंडली से निकले रत्न



माणिक



मूँगा



पुखराज

रत्न	ग्रह	भूमिका	वजन	धातु	उँगली	दिन
माणिक Ruby	सूर्य	जीवन रत्न (लग्नेश)	5 से 7 रत्ती	सोना	अनामिका	रविवार
मूँगा Red Coral	मंगल	भाग्य रत्न (भाग्येश)	6 से 9 रत्ती	सोना/ताँबा	अनामिका	मंगलवार
पुखराज Yellow Sapphire	गुरु	बुद्धि रत्न (पंचमेश)	5 से 7 रत्ती	सोना	तर्जनी	गुरुवार

अभी सूर्य की ही दशा चल रही है ~ माणिक के लिए समय पूरी तरह अनुकूल है। ये तीनों रत्न आपस में मित्र-ग्रहों के हैं, इसलिए तीनों एक साथ, या माणिक से शुरू करके थोड़े-थोड़े अंतराल पर धारण कर सकते हैं

मंत्र व धारण का समय

रत्न	मंत्र	कब
माणिक	ॐ घृणिः सूर्याय नमः	रविवार प्रातः सूर्योदय के समय
मूँगा	ॐ अं अंगारकाय नमः	मंगलवार प्रातः
पुखराज	ॐ बृं बृहस्पतये नमः	गुरुवार प्रातः

मुख्य रत्न	उपरत्न
माणिक	लाल तामड़ा (Garnet) अथवा लाल स्पिनल (Red Spinel)
मूँगा	लाल हकीक (Carnelian) अथवा तामड़ा (Garnet)
पुखराज	सुनहला (Golden Topaz) अथवा सिट्रीन (Citrine)

उपरत्न का बल कम है, इसलिए वजन मुख्य रत्न से डेढ़ से दो गुना ~ धातु, उँगली, दिन व मंत्र वही रहते हैं

य ही र त्त क्यों

रत्न	कारण
माणिक	यह आपकी लग्न-राशि का स्वामी है — समग्र बल, स्वास्थ्य, आत्मविश्वास व जीवन-दिशा इसी से बलवान होते हैं। सबसे पहले यही धारण करें। आपके सूर्य मिथुन राशि में भाव 11 (लाभ व आय) में स्थित हैं — यह रत्न इनके फल को और सशक्त करेगा।
मूँगा	यह आपके नवम (भाग्य) भाव का स्वामी है — भाग्योदय, गुरु-कृपा, धर्म व उन्नति के द्वार यही खोलता है। आपके मंगल मेष राशि में भाव 9 (भाग्य व धर्म) में स्थित हैं — यह रत्न इनके फल को और सशक्त करेगा।
पुखराज	यह आपके पंचम भाव का स्वामी है — बुद्धि, शिक्षा, संतान-सुख व रचनात्मकता को बल देता है। आपके गुरु सिंह राशि में भाव 1 (व्यक्तित्व व स्वास्थ्य) में स्थित हैं — यह रत्न इनके फल को और सशक्त करेगा।

रत्न प्राकृतिक, अनुपचारित व प्रयोगशाला-प्रमाणित ही लें। रत्न ग्रह को बदलता नहीं, उसकी दबी हुई आवाज़ ऊपर लाता है।



सीधी बात ~ आपका रत्न

अ ध्या य 1

अभय शर्मा जी, आपकी कुंडली देखकर मैं एक बात बिल्कुल साफ़ कह सकती हूँ — इस समय आपके लिए **माणिक** (Ruby) सबसे उपयुक्त रत्न है। यह रत्न सूर्य का है, जो आपके लग्न सिंह के स्वामी भी हैं और अभी महादशा के स्वामी भी। यानी जीवन-रत्न और समय का रत्न — दोनों एक ही निकले हैं। इससे बड़ा संयोग कम ही होता है। माणिक अभी आपकी आत्मशक्ति, आत्मविश्वास और जीवन-दिशा को बल देने में सबसे प्रभावी रहेगा।



कुंडली से कारण ~ यही रत्न क्यों

अ ध्या य 2

आपका लग्न सिंह है, और लग्नेश सूर्य हैं। सूर्य आपकी कुंडली में भाव 11 (मिथुन राशि) में स्थित हैं — यह लाभ और इच्छापूर्ति का भाव है। इस स्थान से सूर्य आय, सामाजिक संपर्क और बड़े लक्ष्यों को प्रभावित करते हैं।

षड्बल में सूर्य का बल भरपूर है — 9.86 रूप (न्यूनतम 5)। बल की दृष्टि से वे इस कुंडली के सबसे शक्तिशाली ग्रह हैं। परंतु एक महत्वपूर्ण बात — उनकी **अवस्था मृत है**, जिसका अर्थ यह है कि बल होते हुए भी फल क्षीण हो जाता है, जैसे दीपक में तेल हो पर बाती जली न हो। माणिक इसी बाती को जलाने का काम करता है — सूर्य की दबी हुई शक्ति को ऊपर लाता है।

वेशी योग आपकी कुंडली में बन रहा है — सूर्य से द्वितीय भाव में ग्रह हैं। यह योग सत्यनिष्ठा, यश और परोपकारी स्वभाव देता है। माणिक इस योग को और बल देगा, जिससे इसका फल और मुखर होगा।

अभी **सूर्य महादशा और शनि अंतर्दशा** (फरवरी 2026 से फरवरी 2027) चल रही है। महादशा-स्वामी सूर्य और रत्न एक ही — यह समय माणिक धारण के लिए सबसे उचित है।

नवांश (D9) में सूर्य वृषभ राशि के भाव 9 में हैं — भाग्य और धर्म का भाव। यह बताता है कि सूर्य की असली गहराई भाग्य-वृद्धि और सही दिशा से जुड़ी है।

सूर्य पर केतु की गोचर दृष्टि इस समय है (केतु सिंह राशि में, लग्न भाव 1 में), जिससे सूर्य-ग्रहण दोष का थोड़ा प्रभाव और बढ़ता है — माणिक इस बाधा को कम करने में भी सहायक है।

मना रत्नों की बात करूँ तो — **नीलम बिल्कुल नहीं**, क्योंकि शनि आपके लग्न के लिए भाव 6 और 7 के स्वामी हैं; भाव 6 दुःस्थान है और उसे बल देना उलटा पड़ेगा। **मोती नहीं**, क्योंकि चंद्र भाव 12 (व्यय-भाव) के स्वामी हैं। **हीरा और पन्ना** भी अभी नहीं — शुक्र और बुध दोनों भाव 12 में शत्रु राशि में बैठे हैं और इनकी दशा भी नहीं चल रही।

॥ शास्त्र-प्रमाण ॥

माणिक्यं दिननायकस्य विमलं मुक्ताफलं शीतगोः ।

माहेयस्य च विद्रुमं मरकतं सौम्यस्य गारुत्मतम् ॥

देवेज्यस्य च पुष्परागमसुराचार्यस्य वज्रं शनेः ।

नीलं निर्मलमन्ययोश्च गदिते गोमेदवैदूर्यके ॥

सूर्य का रत्न निर्मल माणिक्य है, चंद्र का मोती, मंगल का मूँगा, बुध का मरकत (पन्ना), गुरु का पुष्पराग (पुखराज), शुक्र का हीरा और शनि का निर्मल नीलम; तथा राहु और केतु के रत्न क्रमशः गोमेद और वैदूर्य (लहसुनिया) कहे गए हैं।

— जातक पारिजात, अध्याय २



इस रत्न का फल ~ जीवन में क्या-क्या बदलेगा

अ ध्या य 3

मन और स्वभाव में बदलाव

सूर्य आत्मसम्मान और आत्मबोध का ग्रह है। जब माणिक सूर्य को जगाता है, तो सबसे पहला बदलाव भीतर होता है। अभी शायद कुछ ऐसा लगता हो कि आप जितना कर सकते हैं, उतना नहीं कर पा रहे — एक अनकही थकान, एक अधूरापन। माणिक धारण के बाद यह धुंध धीरे-धीरे हटने लगती है। आप निर्णय लेने में अधिक दृढ़ होंगे, दूसरों की राय पर कम निर्भर और अपनी बात को स्पष्टता से रखने में अधिक सक्षम। यह आत्मविश्वास दिखावे का नहीं, भीतर से आने वाला होगा।

काम-धंधा और करियर

आपके सूर्य भाव 11 (लाभ) में हैं — इसका अर्थ है कि यह रत्न आपके व्यावसायिक संपर्कों और लाभ के मार्गों को खोलेगा। **दशमांश (D10) में सूर्य कुम्भ लग्न के पहले भाव में हैं** — यह करियर-कुंडली में केंद्र का स्थान है, जो बताता है कि सूर्य आपकी कार्य-छवि और नेतृत्व में सीधे भूमिका निभाते हैं। माणिक से आपकी पहचान और प्रभाव बढ़ेगा — अधिकारियों के सामने, टीम में या ग्राहकों के बीच। जो काम अटके हों, वे आगे बढ़ेंगे। नए अवसर उन दिशाओं से आ सकते हैं जहाँ आपका प्रभाव पहले से है।

धन और आय

सूर्य भाव 11 में हैं — यह आय और लाभ का ही भाव है। माणिक इस भाव के स्वामी को बल देगा, जिससे आय के मार्ग अधिक सुचारु होंगे। विशेषकर वह आय जो आपके व्यक्तित्व, पद या प्रतिष्ठा से जुड़ी हो — जैसे वेतनवृद्धि, पदोन्नति, या किसी नई भूमिका से मिलने वाला लाभ। अप्रत्याशित लाभ की संभावना भी इस अवधि में बनती है, विशेषकर फ़रवरी 2027 से आने वाली सूर्य-बुध अंतर्दशा में।

रिश्ते और घर-परिवार

सूर्य पिता और बड़ों का कारक ग्रह है। माणिक से पिता या पिता-तुल्य व्यक्तियों के साथ संबंध सुधरते हैं, उनसे सहयोग मिलता है। घर में आपकी बात को अधिक गंभीरता से लिया जाएगा। **गजकेसरी योग** आपकी कुंडली में पहले से बन रहा है (चंद्र से केंद्र में गुरु) — सूर्य के बल से यह योग भी जीवन में अधिक स्पष्टता से प्रकट होगा, और परिवार व समाज में सम्मान बढ़ेगा।

स्वास्थ्य और ऊर्जा

सूर्य हृदय, आँखें, रीढ़ और प्राण-ऊर्जा का कारक है। अभी मृत अवस्था में होने के कारण इन क्षेत्रों में कभी-कभी थकान, उत्साह की कमी या एकाग्रता में परेशानी महसूस हो सकती है। माणिक इस ऊर्जा को पुनः जाग्रत करता है। सुबह उठने पर ताज़गी, दिन भर सक्रियता और मन में स्थिरता — ये बदलाव धीरे-धीरे आते हैं, पर आते ज़रूर हैं।

वेशी योग का फल

माणिक से वेशी योग को बल मिलेगा — इस योग की प्रकृति है कि व्यक्ति की बात में सच्चाई और भार होता है, लोग उनकी बात सुनते हैं। आपकी वाणी में प्रभाव बढ़ेगा और आप जो कहेंगे, उसका असर होगा — चाहे काम की जगह हो, परिवार हो या समाज।



कब से असर, कब तक पहनना

अ ध्या य 4

माणिक सामान्यतः धारण के **40 से 60 दिन** में अपना असर दिखाना शुरू करता है — पहले मन में हल्कापन और स्पष्टता के रूप में, फिर बाहरी परिस्थितियों में।

अभी सूर्य महादशा चल रही है (अप्रैल 2023 से अप्रैल 2029) — यह माणिक के लिए सबसे अनुकूल समय है, क्योंकि महादशा-स्वामी और रत्न-स्वामी एक ही हैं। **फ़रवरी 2027 में सूर्य-बुध अंतर्दशा** आएगी — उस समय रत्न का प्रभाव और अधिक स्पष्ट होगा, क्योंकि बुध लाभेश भी हैं।

दिसंबर 2027 में सूर्य-केतु अंतर्दशा आएगी — केतु के साथ सूर्य का संबंध (सूर्य-ग्रहण दोष) इस कुंडली में है, इसलिए उस दौर में माणिक और भी ज़रूरी हो जाएगा।

जब तक सूर्य महादशा चले — **अप्रैल 2029 तक** — माणिक पहनते रहें। उसके बाद चंद्र महादशा आएगी, तब परिस्थिति के अनुसार पुनर्विचार करें।



धारण-विधि ~ वज़न, धातु, उँगली, दिन, मंत्र

अ ध्या य 5

वज़न: 5 से 7 रत्ती — बर्मी या अफ़ग़ानी माणिक उत्तम; रंग गहरा लाल, पारदर्शी और बिना काले धब्बे का हो।

धातु: सोना — पंचधातु भी चलेगी, पर सोना सर्वश्रेष्ठ है।

उँगली: दाएँ हाथ की अनामिका (अनामिका उँगली)।

दिन: रविवार — प्रातः सूर्योदय के एक घंटे के भीतर धारण करें।

शुद्धि: धारण से पहले माणिक को कच्चे दूध या गंगाजल में थोड़ी देर (10~15 मिनट) रखें, फिर साफ़ पानी से धोएँ, सूर्य को जल देने के बाद पहनें।

मंत्र: धारण करते समय 108 बार जपें —

ॐ घृणिः सूर्याय नमः

इसके बाद प्रतिदिन सुबह 11 बार जाप करते रहें — इससे रत्न की ऊर्जा सक्रिय बनी रहती है।

उपरतः यदि माणिक उपलब्ध न हो या बजट कम हो, तो **लाल तामड़ा (Garnet)** अथवा **लाल स्पिनल (Red Spinel)** लें — वजन डेढ़ से दो गुना रखें (8 से 12 रत्ती), विधि और मंत्र वही रहेंगे। यह घटिया विकल्प नहीं — सूर्य को बल देने का उतना ही सच्चा रास्ता है।

॥ शास्त्र-प्रमाण ॥

यस्य यश्च यदा दुःस्थः स तं यत्नेन पूजयेत् ।

एषां धात्रा वरो दत्तः पूजिताः पूजयिष्यथ ॥

जिसका जो ग्रह पीड़ित हो, वह यत्नपूर्वक उसकी उपासना करे। ब्रह्मा ने ग्रहों को वर दिया है — "पूजित होकर तुम भी पूजक का मान रखोगे।"

— बृहत् पाराशर होरा शास्त्र, अध्याय ८४



इस रिपोर्ट का निचोड़

अ ध्या य 6

अभय शर्मा जी, आपकी कुंडली में सूर्य भरपूर बलवान हैं — पर अभी वे अपनी पूरी शक्ति से नहीं बोल पा रहे। जैसे एक प्रतिभाशाली व्यक्ति सही मंच के इंतज़ार में हो। माणिक वही मंच है।

यह रत्न आपके जीवन में केवल एक बाहरी चीज़ नहीं होगा — यह उस भीतरी आत्मविश्वास को जगाएगा जो आपमें पहले से है, पर जिसे कभी-कभी दबाव, थकान या संदेह ढक देते हैं। काम में पहचान, रिश्तों में सम्मान, मन में स्थिरता — ये सब धीरे-धीरे, पर निश्चित रूप से बदलेंगे।

सूर्य महादशा अप्रैल 2029 तक है — यह समय आपका है। माणिक इस समय को और सार्थक बनाएगा। पहनें, टिके रहें, और सूर्योदय के साथ हर दिन की शुरुआत करें — बस यही काफ़ी है।

रत्न कहाँ से लें — कौस्तुभ जेम्स

यह रिपोर्ट जिन लोगों ने बनाई है, रत्न भी उन्हीं का है — **कौस्तुभ जेम्स** (koustubhgems.com), 1997 से धर्मशाला (हिमाचल) में; GJEPC व BIS से जुड़ा। यहाँ हर रत्न प्राकृतिक व अनुपचारित है, प्रयोगशाला-प्रमाणपत्र और सील-बंद पैकिंग के साथ आता है; दाम सीधा-सीधा, मोल-भाव नहीं। सबसे बड़ी बात — रत्न इसी रिपोर्ट के वजन, धातु व उँगली के अनुसार तैयार मिलता है, इसलिए अलग से कुछ समझाना नहीं पड़ता।

आपके रत्न (माणिक) की कड़ी: <https://koustubhgems.com/collections/ruby>

△ रत्न प्राकृतिक, अनुपचारित व प्रयोगशाला-प्रमाणित ही लें। यह रिपोर्ट आपकी कुंडली की गणना पर आधारित मार्गदर्शन है।

॥ ॐ शुभम् ॥

❖ ParasVani · पारस वाणी ❖ रत्न रिपोर्ट ❖ अभय शर्मा (कल्पनिक) ❖

यह AI-सहायित वैदिक विश्लेषण मार्गदर्शन हेतु है — निर्णय अपने विवेक से लें।